L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- III
B.A PAPER - VI
Psychology (Honours)
Topic- Factor Related to Job.

Dr. Pramod Kumar Sahu
Assistant Professor,
Guest Teacher,
V.S.J. College Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsdg2018@gmail.com

कार्य सम्बन्धी कारकों के अन्तर्गत कार्य की प्रकृति, कारखाना की स्थिति, भौगोलिक दशाएँ तथा कार्यकालिक प्रतिरूप, यह चार महत्वपूर्ण पक्ष आते हैं। इनका विवरण निम्न प्रस्तुत कर रहे हैं।

(1) कार्य की प्रकृति (Nature of Work) एक-सा कार्य लगातार करते रहने से अरोचकता, थकान आदि उत्पन्न होती है। और कार्य के प्रति रुचि कम होने के साथ-साथ असंतोष की मात्रा बढ़ती जाती है। यदि कार्य में विविधता लाई जाए या कार्य को बदल-बदल कर कराया जाए तो कर्मचारी की कार्य-संतोष अधिक होगी, मौर्स ने यह स्पष्ट किया कि कर्मचारी जो एक-सा कार्य करते हैं। उनमें से 60 प्रतिशत अपने कार्य से असंतुष्ट रहते हैं। होपाक ने अपने अध्ययन से जो निष्कर्ष निकाले उससे यह मालूम हुआ कि यदि कार्य के प्रकार में परिवर्तन करते रहें तो कार्य-संतोष की मात्रा अधि. प्रतिशत पाई जाती है। एक तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट किया गया कि शिक्षकों में लगभग 95% ऐसे थे, जो अपने व्यवसाय से संतुष्ट थे।

किन्तु इसके ठीक विपरीत एक बड़े के कारखाने में कर्मचारियों में से 98 प्रतिशत ने अपने कार्य के प्रति असंतोष प्रकट किया, अतः यह आवश्यक है कि यदि कर्मचारियों में कार्य संतोष की मात्रा बढ़ानी है तो कार्य की प्रकृति को बदलते रहना चाहिए।

(2) कारखाने की रचना / (Structure of the Factory) बड़े कारखाने तथा छोटे कारखाने की तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद यह तथ्य सामने आया है कि यदि यह कर्मचारियों की अपेक्षा छोटे कारखाने के कर्मचारियों में कार्य संतोष की मात्रा अधिक पायी जाती है। इसका कारण यह है कि छोटे कारखाने में सुविधायें तथा अवसर अधिक मिलते हैं। कर्मचारियों की अपनी पदोन्नति की आशा बनी रहती है। मालिक और प्रबन्धकों के समक्ष अपने विचार प्रकट करने का पूरा अवसर मिलता है। वे अपने सुझाव दे सकते हैं। कारखाने के छोटे आकार के कारण कर्मचारियों को आपस में निकट का संपर्क होता है। वे एक-दूसरे की मनोवृत्ति को प्रभावित कर सकते हैं। सामाजिकता का पूर्ण अवसर मिलता है। जिसके कारण प्रबन्धक कर्मचारी को कर्मचारी प्रबन्धक को तथा कर्मचारी अपने कार्य को भली-भांति और समीप में समझ लेता है। बड़े बड़े कारखानों में ये सब बातें असम्भव है। आकार बड़ा होने के कारण समीपता कम होती है।

Scanned with CamScanner

III

एक - कहीं के कर्मचारी अपनी मनोवृत्तियों से प्रभावित नहीं कर पाता है। कुछ मिलाकर यह कह सकते हैं कि जहाँ कारखाने का आकार छोटा होगा, वहां कर्मचारी अधिक संतुष्ट होगा और जहाँ बड़ा होगा वहाँ कार्य के प्रति असन्तोष पैदा होगा तथा असंतोष की भावना बढ़ेगी धीरे धीरे कर्मचारी अपने कार्य के प्रति उत्तरदायित्व से विमुख होता जायेगा

(3) भौगोलिक कारक :- यह बात तो हम अपने निजी अनुभव से ही जानते हैं। कि बड़े शहरों में रहने वाले लोग असंतुष्ट तथा कुंठाओं के शिकार अधिक होते हैं अपेक्षाकृत छोटे शहरों के इसी प्रकार समुद्र तटों के पास रहने वाले पहाड़ों पर रहने वालों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट होते हैं। यही बात कर्मचारियों पर लागू होती है। बड़े - बड़े औद्योगिक शहरों में कार्य करने वाले कर्मचारी अपने - अपने कार्य से असंतुष्ट रहते हैं। इस विषय में अनेक तर्क सामने आते हैं। अधिक जनसंख्या के कारण मानसिक संतुलन के लिए जो सुविधाएं मिलनी चाहिए। वे नहीं मिल पाती हैं, बड़े शहरों में बेकारी की अपेक्षा कमी मिलती है, जबकि छोटे - शहरों में एक विशेष प्रकार का मनोवैज्ञानिक वातावरण मिलता रहता है। जो संतोष को जन्म देता है।

(4) व्यावसायिक प्रतिष्ठा :- कर्मचारी उन कार्यों के प्रति अत्यधिक संतोष व्यक्त करते हैं। जिनकी प्रतिष्ठा - शक्ति अधिक होती है। विशेषकर जिस कार्य की सामाजिक प्रतिष्ठा जितनी अधिक होगी कर्मचारी उसे - उतना - ही अधिक पसन्द करते हैं। अनेक कार्य ऐसे हैं। जिनमें वेतन बहुत मिलता है।

Scanned with CamScanner

(11)

मानव की आरक्षी है। प्रथमा है। (प्रथमा) है। कार्य के धन्धे का कम है। तथा जो आवश्यक सुविधायें मिलनी चाहिए। मिलती है। फिर भी उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा उतनी नहीं है। जितनी अन्य व्यवसायों की है। इसके और भी व्यवसाय हैं जिनमें वेतन कम मिलता है। मेहनत भी अधिक करना पड़ती है। अनेक सुविधायें भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होती है। फिर भी लोग उन्हें अपनाना चाहते हैं। इसका कारण सामाजिक प्रतिष्ठा ही है। उदाहरण के लिए शिक्षा के क्षेत्र में एक अध्यापक उच्चतम पद पर कार्य कर रहा है। वेतन भी बहुत अधिक मिल रहा है। किन्तु व्यवसाय की सतह से एक तथा अन्य सरकारी अफसर उच्च माने जाते हैं। नौकरी करने वाले की अपेक्षा छोटे से छोटे व्यापार करने वाले की समाज में विशेष मान-सम्मान मिलता है। यह मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा के कारण में समाज की रचना की रचना का उत्तरदायी है। इस प्रकार जिन समाज जिन कार्यों को श्रेष्ठ मानता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Date - 28/07/2020